गुरु नानक

गुरु नानक का जन्म 1469 ई० में तलबंडी ग्राम, जिला लाहौर में हुआ था । इनका जन्म-स्थान 'नानकाना साहब' कहलाता है जो अब पाकिस्तान में है । इनके पिता का नाम कालूचंद खत्री, माँ का नाम तृप्ता और पत्नी का नाम सुलक्षणी था । इनके पिता ने इन्हें व्यवसाय में लगाने का बहुत उद्यम किया, किन्तु इनका मन भक्ति की ओर अधिकाधिक झुकता गया । इन्होंने हिन्दू-मुसलमान दोनों की समान धार्मिक उपासना पर बल दिया । वर्णाश्रम व्यवस्था और कर्मकांड का विरोध करके निर्गुण ब्रह्म की भक्ति का प्रचार किया । गुरुनानक ने व्यापक देशाटन किया और मक्का-मदीना तक की यात्रा की । मुगल सम्राट बाबर से भी इनकी भेंट हुई थी । गुरु नानक ने 'सिख धर्म' का प्रवर्तन किया । गुरुनानक ने पंजाबी के साथ हिंदी में भी कविताएँ कीं । इनकी हिंदी में ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों का मेल है । इनके भक्ति और विनय के पद बहुत मार्मिक हैं । इनके दोहों में जीवन के अनुभव उसी प्रकार गुँथे हैं जैसे कबीर की रचनाओं में, लेकिन इन्होंने उलटबाँसी शैली नहीं अपनाई । इनके उपदेशों के अंतर्गत गुरु की महत्ता, संसार की क्षणभंगुरता, ब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता, नाम जप की महिमा, ईश्वर की सर्वव्यापकता आदि बातें मिलती हैं । इनकी रचनाओं का संग्रह सिखों के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने सन् 1604 ई० में किया जो 'गुरु ग्रंथ साहिब' के नाम से प्रसिद्ध हुआ । गुरु नानक की रचनाएँ हैं – 'जपुजी', 'आसादीवार', 'रहिरास' और सोहिला । कहते हैं कि सन् 1539 में इन्होंने 'वाह गुरु' कहते हुए अपने प्राण त्याग दिए ।

निर्गुण निराकार ईश्वर के उपासक गुरुनानक हिंदी की निर्गुण भक्तिधारा के एक प्रमुख कवि हैं । पंजाबी मिश्रित ब्रजभाषा में रचित इनके पद सरल सच्चे हृदय की भक्तिभावना में डूबे उद्‌गार हैं । इन पदों में कबीर की तरह प्रखर सामाजिक विद्रोह-भावना भले ही न दिखाई पड़ती हो, किन्तु धर्म-उपासना के कर्मकांडमूलक सांप्रदायिक स्वरूप की आलोचना तथा सामाजिक भेदभाव के स्थान पर प्रेम के आधार पर सहज सद्‌भाव की प्रतिष्ठा दिखलाई पड़ती है । नानक के पद वास्तव में प्रेम एवं भक्ति के प्रभावशाली मधुर गीत हैं । यहाँ नानक के ऐसे दो महत्त्वपूर्ण पद प्रस्तुत हैं । प्रथम पद बाहरी वेश-भूषा, पूजा-पाठ और कर्मकांड के स्थान पर सरल सच्चे हृदय से राम-नाम के कीर्तन पर बल देता है, क्योंकि नाम-कीर्तन ही सच्ची स्थायी शांति देकर व्यक्ति को इस दुखमय जीवन के पार पहुँचा पाता है । द्वितीय पद में सुख-दुख में एक समान उदासीन रहते हुए मानसिक दुर्गुणों से ऊपर उठकर अंतःकरण की निर्मलता हासिल करने पर जोर दिया गया है । संत कवि गुरु की कृपा प्राप्त कर इस पद में गोविंद से एकाकार होने की प्रेरणा देता है ।

राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा

राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ।
बिखु खावै बिखु बोलै बिनु नावै निहफलु मटि भ्रमना ॥
पुसतक पाठ व्याकरण बखाणैं संधिआ करम निकाल करै ।
बिनु गुरसबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु अरुझि मरै ॥
डंड कमंडल सिखा सूत धोती तीरथ गवनु अति भ्रमनु करै ।
रामनाम बिनु सांति न आवै जपि हरि हरि नाम सु पारि परै ॥
जटा मुकुट तन भसम लगाई बसन छोडि तन नगन भया ।
जेते जीअ जंत जल थल महीअल जत्र तत्र तू सरब जीआ ॥
गुरु परसादि राखिले जन कोउ हरिरस नानक झोलि पीआ ।

जो नर दुख में दुख नहिं मानै

जो नर दुख में दुख नहिं मानै ।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ॥
नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना ।
हरष सोक तें रहै नियारो, नाहि मान अपमाना ॥
आसा मनसा सकल त्यागि कै जग तें रहै निरासा ।
काम क्रोध जेहि परसे नाहिन तेहिं घट ब्रह्म निवासा ॥
गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्हीं तिन्ह यह जुगति पिछानी ।
नानक लीन भयो गोबिंद सो ज्यों पानी सँग पानी ॥

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि किसके बिना जगत् में यह जन्म व्यर्थ मानता है ?
2. वाणी कब विष के समान हो जाती है ?
3. नाम-कीर्तन के आगे कवि किन कर्मों की व्यर्थता सिद्ध करता है ?
4. प्रथम पद के आधार पर बताएँ कि कवि ने अपने युग में धर्म-साधना के कैसे-कैसे रूप देखे थे ?
5. हरिरस से कवि का अभिप्राय क्या है ?
6. कवि की दृष्टि में ब्रह्म का निवास कहाँ है ?
7. गुरु की कृपा से किस युक्ति की पहचान हो पाती है ?
8. **व्याख्या करें :**
   (क) राम नाम बिनु अरुझि मरै ।
   (ख) कंचन माटी जानै ।
   (ग) हरष सोक तें रहै नियारो, नाहि मान अपमाना ।
   (घ) नानक लीन भयो गोविंद सौ, ज्यों पानी संग पानी ।
9. आधुनिक जीवन में उपासना के प्रचलित रूपों को देखते हुए नानक के इन पदों की क्या प्रासंगिकता है ? अपने शब्दों में विचार करें ।

कविता के आस-पास

1. गुरुनानक के इन पदों से मिलते-जुलते कबीर के दो पद एकत्र करें ।
2. नाम महिमा का बखान करने वाले सगुण भक्त कवियों के कुछ वचन एकत्र कर विचार करें कि दोनों के भावों में कहाँ तक समानता है ?
3. मध्ययुग के निर्गुण संत कवियों की काल-निर्देश करते हुए एक क्रमवार सूची तैयार करें ।
4. 'गोधूलि भाग-1' में पठित रैदास के पदों के साथ गुरुनानक के इन पदों की तुलना करते हुए एक टिप्पणी लिखें ।

भाषा की बात

1. **पद में प्रयुक्त निम्नांकित शब्दों के मानक आधुनिक रूप लिखें –**
   बिरथे, बिखु, निहफलु, मटि, संधिआ, करम, गुरसबद, तीरथभगवनु, महीअल, सरब, माटी, अस्तुति, नियारो, जुगति, पिछानी
2. दोनों पदों में प्रयुक्त सर्वनामों को चिह्नित करें और उनके भेद बताएँ ।

3. निम्नलिखित शब्दों के वाक्य-प्रयोग करते हुए लिंग-निर्णय करें –

जग, मुक्ति, धोती, जल, भस्म, कंचन, जुगति, स्तुति

4. निम्नलिखित विशेषणों का स्वतंत्र वाक्य प्रयोग करें –

व्यर्थ, निष्फल, नग्न, सर्व, न्यारा, सकल

शब्द निधि

बिरथे : व्यर्थ ही
जगि : संसार में
बिखु : विष
नावै : नाम
निहफलु : निष्फल
मटि : मति, बुद्धि
संधिआ : संध्या, संध्याकालीन उपासना
गुरसबद : गुरु का उपदेश
अरुझि : उलझकर
डंड : दंड (साधु लोग जिसे वैराग्य के चिह्न के रूप में धारण करते हैं)
सिखा : चोटी
सूत : जनेऊ
जीअ : जीव
जंत : जंतु, प्राणी
महीअल : महीतल, धरती पर
कंचन : सोना
अस्तुति : स्तुति, प्रार्थना
नियारो : न्यारा, अलग, पृथक
परसे : स्पर्श
घट : घड़ा (प्रतीकार्थ – देह, शरीर)
जुगति : युक्ति, उपाय
पिछानी : पहचानी

❑❑❑

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA